माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील **H.S.**

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड 001 परीक्षा का विषय हिन्दी

2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 05/03/09

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर कोड T-1001 सेट A

केन्द्र क्रमांक की सील

केन्द्राध्यक्ष
केन्द्र क्रमांक-752006

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में X अंकों में X

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 11 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)

नाम पद

पता/संस्था

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक **K**

4. परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

1	9	7	5	2	0	5	5	6

5. नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

एक	नौ	सात	पाँच	दो	शून्य	पाँच	पाँच	छः

प्रश्न	पृष्ठ	प्राप्तांक	प्रश्न	पृष्ठ	प्राप्तांक	प्रश्न	पृष्ठ	प्राप्तांक
1								
2								
3								
4								
5								
6								
7								
8								
9								
10								
कुल प्राप्त								

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिकाओं वस्था स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया। पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कवर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है ए

हस्ताक्षर (परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक 9680133

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

दिनांक 9680087

B S E M P

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोडें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

योग ... कुल अंक

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न क्रमांक (1) का उत्तर

(i) उत्तर ⇒ रूपक

(ii) उत्तर ⇒ विचारात्मक

(iii) उत्तर ⇒ ज्वाला प्रसाद

(iv) उत्तर ⇒ महाकाव्य

(v) उत्तर ⇒ श्रृंगार

B S E M P

प्रश्न क्रमांक (2) का उत्तर

(i) उत्तर ⇒ (घ) व्यंजन संधि

(ii) उत्तर ⇒ (ग) विद्या का आलय

(iii) उत्तर ⇒ (ग) उद्बोधन से

(iv) उत्तर ⇒ (ग) सरस्वती

(v) उत्तर ⇒ (ख) 28

प्रश्न क्रमांक (3) का उत्तर

(i) उत्तर ⇒ सत्य

(ii) उत्तर ⇒ सत्य

(iii) उत्तर ⇒ सत्य

(iv) उत्तर ⇒ असत्य

(v) उत्तर ⇒ सत्य

प्रश्न क्रमांक (4) का उत्तर

"अ" — उत्तर

(i) रस को काव्य की — (ख) आत्मा कहते हैं।

P.T.O.

(ii) गोदान उपन्यास के रचयिता - (ग) प्रेमचन्द ।
(iii) चिकित्सा विज्ञान से संबंधित
एक प्रमाणिक ग्रन्थ - (क) सुश्रुत संहिता ।
(iv) प्रसिद्ध आंचलिक उपन्यासकार - (ङ) फणीश्वरनाथ 'रेणु'
(v) अंधे की लाठी - (घ) एकमात्र सहारा ।

प्रश्न क्रमांक (5) का उत्तर

(i) उत्तर ⇒ रहस्यवाद की ।
(ii) उत्तर ⇒ मार्गरेट एलिजाबेथ नोबुल ।
(iii) उत्तर ⇒ सरदार सुजान सिंह ।
(iv) उत्तर ⇒ शांत रस ।
(v) उत्तर ⇒ खण्ड काव्य ।

प्रश्न क्रमांक (11) का उत्तर [अथवा]

उत्तर ⇒ यक्ष द्वारा पूछे गए सभी प्रश्नों का ठीक-2 उत्तर युधिष्ठिर ने दिया । तब यक्ष ने प्रसन्न होकर युधिष्ठिर से उसके किसी एक भाई को जीवित करने का वर दिया । तब युधिष्ठिर ने अपने भाई माद्री - पुत्र नकुल को जीवित करने की इच्छा प्रकट की । युधिष्ठिर के इस पक्षपात से रहित व्यवहार से प्रसन्न होकर यक्ष ने उनके चारों भाईयों को जीवित कर दिया तथा आशी-र्वाद देते हुए कहा कि, - " तुम्हारा 12 वर्षों का वनवास अब समाप्त ही होने वाला है। इसके बाद तुम्हें एक वर्ष का अज्ञातवास भी बिताना है । फिर वह भी सफलतापूर्वक पूरा हो जाएगा।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

तुम्हें और तुम्हारे भाईयों को कोई भी नहीं पहचान सकेगा। तुम अपनी प्रतिज्ञा सफलतापूर्वक पूरी करोगे।" यह आशीर्वाद देकर यक्ष अंतर्धान हो गए।

प्रश्न क्रमांक (12) का उत्तर

उत्तर ⇒ अतिशयोक्ति अलंकार ⇒ काव्य में जहाँ लोक-सीमा पर अतिक्रमण करके किसी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताया जाता है, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण :- (i) हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आगि।
लंका सारी जरि गई, गए निशाचर भागि।

इसमें हनुमान जी की पूँछ का बहुत बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया गया है।

(ii) पड़ी अचानक नदी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।

प्रस्तुत पंक्तियों में राणा प्रताप के घोड़े चेतक की गति का वर्णन और शौर्य को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया है।

प्रश्न क्रमांक (13) का उत्तर [अ] का उत्तर

उत्तर ⇒ (क) दिन - रात एक करना - अत्यधिक परिश्रम करना।

वाक्य ⇒ राम ने परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए दिन - रात एक कर दिया।

P.t.o.

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(ख) गज भर की छाती होना - गर्व अनुभव करना।
वाक्य ⇒ राम के हाई स्कूल परीक्षा में प्रथम आने से उसके पिताजी की छाती गज भर की हो गई है।

(ग) गागर में सागर - कम शब्दों में भाव-विस्तार कर देना।
वाक्य ⇒ कवि बिहारी के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है कि उन्होंने गागर में सागर भर दिया है।

प्रश्न क्रमांक (13) [ब] का उत्तर
उत्तर ⇒ हिन्दी की चार बाल पत्रिकाओं के नाम नि. लि. हैं।

बाल पत्रिका	संबंधित अखबार
(i) स्पेक्ट्रम	नई दुनिया।
(ii) बाल - भास्कर	दैनिक भास्कर।
(iii) स्कूल - भास्कर	ग्रीष्मकालीन दैनिक भास्कर।
(iv) स्कूल - 'टाइम्स'	हिन्दुस्तान टाइम्स'।

प्रश्न क्रमांक (14) का उत्तर
"सियाराम शरण गुप्त"
(क) दो रचनाएँ - (i) मौर्य विजय,
(ii) मानुषी।

BSEM

(ख) भाषा शैली ⇒ गुप्त जी की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों को भी इन्होंने अपने काव्य में स्थान दिया है। आपकी भाषा पात्रों के अनुसार, शिक्षित तथा अशिक्षित होने तथा परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती है।

सियारामशरण गुप्त जी की शैली वर्णन प्रधान है तथा आवश्यकता होने पर अपने चित्रण को प्रखर बनाने के लिए आपने भावात्मक, व्यंग्यात्मक, विवरणात्मक और आलोचात्मक शैली में भी रचना की है।

(ग) साहित्य में स्थान ⇒ राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी के भ्राता सियारामशरण शरण गुप्त जी का हिन्दी साहित्य में विशेष स्थान है। सामाजिक समस्याओं और कुरीतियों को अपना लक्ष्य बनाने वाले गुप्त जी सदा ही हिन्दी साहित्य के लिए स्मरणीय रहेंगे।

प्रश्न क्रमांक (15) का उत्तर

"मलिक मुहम्मद जायसी"

क) दो रचनाएँ – (i) पद्मावत,
(ii) अखरावट।

(ख) भावपक्ष – कलापक्ष ⇒ हिन्दु - मुस्लिम एकता के समर्थक मलिक मुहम्मद जायसी जी ने अपने काव्य में लौकिक प्रेम के द्वारा अलौकिक प्रेम की अनुभूति कराने में सफलता प्राप्त की है। P.T.O.

पृष्ठ के अंकों का योग

इनके काव्य में श्रृंगार रस को विशेष स्थान प्राप्त है। आपने नारी को ब्रह्म सत्ता का प्रतीक माना है। आपका विरह-वर्णन तो सचमुच अद्वितीय है।

जायसी की भाषा ठेठ अवधी है। इसके साथ ही अरबी एवं फारसी शब्दों तथा मुहावरों के प्रयोग ने आपके काव्य को नई दिशा दी है। आपने मसनवी शैली तथा प्रबंध काव्य की रचना की है। उपमा, रूपक, यमक, अनुप्रास आदि आपके प्रिय अलंकार हैं।

आपने दोहा, चौपाई और कहीं-2 सोरठा छन्द को भी अपनाया है।

(ग) साहित्य में स्थान ⇒ 'जायसी' निर्गुण भक्ति धारा के प्रतिनिधि कवि हैं। आपने ईश्वर की प्राप्ति का साधन "प्रेम" को बताया है। आपने अपने महाकाव्य पद्मावत में इसी को उदा. देते हुए परम सत्ता को पाने का मार्ग सुझाया। आपके काव्य का स्वरूप विदेशी होते हुए भी आत्मा विशुद्ध भारतीय है। आपका स्थान हिन्दी साहित्य जगत में सम्मान के साथ लिया जाता रहेगा।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न क्रमांक (16) का उत्तर [अथवा]

कबहूँ - - - - - - - - बिहरैं।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के पाठ-2 'वात्सल्य भाव' के खण्ड 'अ'

'कवितावली' से ली गई हैं। इनके रचयिता "गोस्वामी तुलसीदास" जी हैं।

प्रसंग ⇒ प्रस्तुत पद में शिशु श्री राम के सात्विक बाल-हठ तथा बालोचित व्यवहार का अत्यंत ही मनमोहक वर्णन किया गया है।

व्याख्या ⇒ तुलसीदास जी बालक श्री राम के हठ का वर्णन करते हुए कहते हैं कि कभी शिशु श्री राम चंद्रमा माँगने की जिद करते हैं, तो कभी उसकी परछाईं देखकर डर जाते हैं। कभी दोनों हाथों से ताली बजा-2 कर नृत्य करते हैं तो सभी माताएँ मन में हर्ष का अनुभव करती हैं। कभी यदि क्रोधित होकर किसी चीज़ की हठ करते हैं तो उसे लेकर ही मानते हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि विलक्षण सौन्दर्य वाले श्री राम सहित अवध के राजा दशरथ के चारों पुत्र मेरे मन रूपी मंदिर में सदा ही विहार करते रहें अर्थात् मेरे मन में उनके अतिरिक्त और कोई भाव जाग्रत न हो।

विशेष - (i) बाल-हठ का स्वभाविक चित्रण किया गया है।

(ii) शांत रस की छटा है।

(iii) शिशु श्री राम के बालोचित व्यवहार का सजीव चित्रण किया गया है।

P.t.o.

प्रश्न क्रमांक (न) का उत्तर

हमारे देश - - - - - - - - - - - - भावना को ही।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत गद्यखण्ड हमारी पाठ्य-पुस्तक के पाठ - 1 "मैं और मेरा देश" नामक निबंध से लिया गया है। इसके निबंधकार श्री कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर जी है।

प्रसंग ⇒ प्रस्तुत गद्यांश में हमारे देश की उन्नति के लिए आवश्यक दो चीजों का वर्णन किया गया है जिनकी हमारे देश को बहुत अधिक आवश्यकता है।

व्याख्या ⇒ कन्हैयालाल जी कहते हैं कि हमारे देश के उत्थान के लिए हमें दो बातों का ज्ञान होना नितांत आवश्यक है। उनमें से एक है, "शक्ति (बल) का ज्ञान" तथा दूसरी बात है, "सौंदर्य का ज्ञान।" हमें केवल इसी भावना से कर्म करते रहना चाहिए कि हमारा कोई भी काम ऐसा न हो जो देश की शक्ति को कम करके उसे कमजोर बनाए तथा न ही कुरूपता की भावना को बढ़ाए। इसके विपरीत हमारे कार्य हमेशा ऐसे होना चाहिए जो देश की शक्ति में वृद्धि करें तथा सौंदर्य को बढ़ाए। तभी देश का विकास संभव है।

विशेष: (i) विवेचनात्मक शैली में वर्णन।
(ii) भाषा सरल, सुबोध और साफ है।

BSEMP

प्रश्न क्रमांक (18) का उत्तर

(क) उत्तर ⇒ शीर्षक ⇒ यथार्थ मनुष्य

अथवा मानव : भगवान की सर्वश्रेष्ठ रच

(ख) उत्तर ⇒ यथार्थ मनुष्य उसे कहा गया है, जो मानवता का आदर करना जानता हो, कर सकता हो।

(ग) उत्तर ⇒ सारांश ⇒ मानव को सदा ही मानवता का आदर करना चाहिए और किसी भी मानव से मूर्ख या गरीब होने के कारण घृणा नहीं करना चाहिए। हर मानव को दूसरे मानव की सदा मदद ही करनी चाहिए क्योंकि वह ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है।

प्रश्न क्रमांक (19) का उत्तर

05/03/09 वार्ड क्र. 6, विश्राम गृह,
पुरानी डिण्डौरी, जिला - डिण्डौरी
म. प्र.।

प्रिय मित्र शिवम्,

नमस्ते,

मैं यहाँ सपरिवार कुशल हूँ और आशा करता हूँ कि तुम भी वहाँ पर कुशलता पूर्वक रह रहे होंगे।

अन्य समाचार यह है कि बहुत दिनों के बाद तुम्हारा पत्र मिला मैं उसे पढ़कर अत्यंत ही प्रसन्न हुआ। तुम्हें ज्ञात हो कि हमारी वार्षिक परीक्षाएँ निकट हैं। अतः मैं पढ़ाई में व्यस्त

P.T.O.

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMI

पूर्णांक

था। इसलिए पत्र लिखने में देर हो गई। मेरे और तुम्हारे वार्षिक - पेपर एक साथ ही होंगे। अतः तुम भी अपनी पढ़ाई में व्यस्त होंगे। मैं आशा करता हूँ कि इस वर्ष भी परीक्षा में अच्छे अंक अर्जित करो और अपने माता - पिता का नाम रोशन करो। परीक्षा-परिणाम आने पर मुझे पत्र द्वारा सूचित करना।

अन्त में तुम्हारे माता - पिता को चरण - स्पर्श और छोटे भाई - बहनों को शुभाशीष।

शेष शुभ।

दिनाँक - 05/03/09

तुम्हारा मित्र

नितिन

ESEMP

प्रश्न क्रमांक (6) का उत्तर [अथवा]

उत्तर => कवि ने कहा है कि इस संसार में गुणी व्यक्ति को बहुत से लोग चाहते हैं, जबकि अवगुणी व्यक्ति को कोई भी नहीं पूछता। कवि ने उदाहरण देते हुए स्पष्ट किया है कि जैसे कौए और कोयल की वाणी को सभी सुनते हैं। यद्यपि दोनों ही काले रंग के होते हैं। फिर भी कोयल अपनी वाणी के कारण सभी को प्रिय लगती है, जबकि कौआ अपनी कर्कश वाणी के कारण तिरस्कार का पात्र बनता है।

पृष्ठ के अंकों का योग

ठीक इसी प्रकार मनुष्य को भी अपने दुर्गुणों को त्यागकर सद्गुणों का विकास करना चाहिए क्योंकि इस संसार में गुणी व्यक्ति का ही महत्व है। कवि यही संदेश देना चाहते थे।

प्रश्न क्रमांक (7) का उत्तर [अथवा]

उत्तर ⇒ कबीरदास जी ने बताया है कि हमें कभी भी किसी दुर्बल व्यक्ति को सताना या कष्ट नहीं पहुँचाना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से वह विरोध तो प्रकट नहीं कर पाएगा क्योंकि उसके पास बल नहीं है, लेकिन उसके मुख से निकली दर्द भरी श्वास (हाय) व्यक्ति का बड़ा भयंकर विनाश कर देती है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार मरे हुए पशु की खाल से बनने वाली धौंकनी ~~लोहे~~ जैसे कठोर पदार्थ को भस्म कर देती है। इसलिए हमें सदैव ही दुर्बल की दर्द भरी हाय से बचना चाहिए क्योंकि उसके बहुत ह भयंकर विनाशकारी परिणाम होते हैं।

प्रश्न क्रमांक (8) का उत्तर [अथवा]

उत्तर ⇒ प्रयोगवाद काव्य की दो प्रमुख विशेषताएँ नि. लि. हैं।

(1) प्रयोगवादी काव्य के कवियों ने नवीन उपमानों का प्रयोग करते हुए प्रेम भावनाओं का अत्यंत खुला चित्रण किया है, जिससे P.T.O.

B S E M P

पृष्ठ के ... का भाग

इनके काव्य में अश्लीलता का समावेश हो गया है।

(2) इस काल के कवियों ने मुक्त छंदों, व्यंग्य शैली और बुद्धितत्व को बहुत अधिक प्रधानता दी है।

प्रयोगवाद के दो कवि एवं उनकी रचनाएँ निम्नवत् हैं।

(1) स. ही. वात्स्यायन 'अज्ञेय' —
रचनाएँ - हरी घास पर क्षण भर, आँगन के द्वार पार, त्रिशंकु आदि।

(2) गजानंद माधव 'मुक्तिबोध' —
रचनाएँ - चाँद का मुख टेढ़ा है, भूरि-भूरि खाक धूलि आदि।

प्रश्न क्रमांक (9) का उत्तर

उत्तर ⇒ जीवनी और आत्मकथा में निम्नलिखित अंतर है।

(1) जीवनी में एक लेखक किसी अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति के जीवन-वृत्त को प्रस्तुत करता है जबकि आत्मकथा में लेखक स्वयं के जीवन वृत्त को लिखता है।

(2) ~~जीवनी~~ आत्मकथा कथात्मक शैली में लिखी जाती है जबकि जीवनी वर्णनात्मक शैली में लिखी जाती है।

(3) जीवनी में विवरण एवं तथ्यों की प्रधानता रहती है जबकि आत्मकथा में

BSEMP

अनुभूति की गहराई होती है।
(4) जीवनी में लेखक तटस्थ होकर विवरण देता है, जबकि आत्मकथा में लेखक अपने दृष्टिकोण से विवरण देता है।
(5) जीवनी की अपेक्षा आत्मकथा एक कठिन कृति है।

प्रश्न क्रमांक (10) का उत्तर [अथवा]

उत्तर ⇒ जब भी मोहन अपने पुत्र शिबू को बैल का कोई काम करने को कहता है तो शिबू बैल को बेचने कहकर उसकी बात अनसुनी कर देता था। इस पर मोहन, शिबू को फटकारते हुए कहता है कि "अभी घर में जोड़ी न होती तो इतने कहने बनाना न आता। बैल तो किसान के हाथ-पैर होते हैं। किसी के एक हाथ के टूट जाने पर कोई दूसरा हाथ भी नहीं कटा लेता। मैं इसकी जोड़ी मिलाने की फिक्र में हूँ और तू कहता है कि बेच दो। चला जा, दूर हट। जहाँ जाना हो, चला जा। मैं खुद ही सब कर लूँगा।" मोहन दोगुने उत्साह के साथ बैल की सेवा करता है। उसे नहलाता है, चारा डालता है। इस प्रकार मोहन अपने बैल का बचाव करता है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न क्रमांक (20) का उत्तर

(i) जल ही जीवन है।

रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरै, मोती, मानुष, चून।

प्रस्तावना ⇒ पृथ्वी पर जीवन के लिए जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण वायु के बाद है, वह "जल" ही है। यदि जल न होता तो शायद यह जीवन भी न होता। कहा भी गया है - "जल ही जीवन का आधार है।" वास्तव में जल के बिना तो कुछ भी असंभव ही है। जल के निरंतर घटते हुए स्रोत, अपव्यय तथा प्रदूषण को देखते हुए इसके संरक्षण एवं संवर्द्धन पर ध्यान दिया जाना चाहिए अन्यथा शीघ्र ही यह संपूर्ण सृष्टि ही नष्ट हो जाएगी।

(2) जल के स्रोत ⇒ जल के प्रमुख स्रोत हैं।

(i) पृष्ठीय जल ⇒ धरती पर पाई जाने वाली नदियों, झीलों एवं तालाबों में जो जल पाया जाता है, उसे ही पृष्ठीय जल कहते हैं। मनुष्य पृष्ठीय जल का ही सर्वाधिक उपयोग करता है।

(ii) भौम जल ⇒ वर्षा आदि का जल भूमि द्वारा सोख लिया जाता है, जिसे ट्यूब-वेल, कुँओं और हैण्डपम्प से पृथ्वी पर

BSEMP

लाया जाता है। इसे ही भौम जल कहते हैं।

(iii) आकाशीय जल ⇒ यह जल वाष्प के रूप में होता है। जिसके कारण इसका उपयोग नहीं किया जा सकता।

(iv) महासागरीय जल ⇒ महासागर में पाया जाने वाला जल महासागरीय जल कहलाता है। लवण होने के कारण इसका उपयोग पेय जल के रूप में नहीं किया जा सकता।

(3) जल के उपयोग ⇒ जल का हमारे दैनिक जीवन की सभी क्रियाओं में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। पीने, नहाने, बर्तन, कपड़े आदि साफ करने में जल का ही उपयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त इससे टर्बाइन चलाकर जल-विद्युत का निर्माण किया जाता है। जल के द्वारा ही परिवहन एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के मार्ग सरल हो गए हैं तथा समय और धन की बचत होती है।

(4) जल प्रदूषण ⇒ जल के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक संरचना में हुए अवांछनीय परिवर्तन, जिससे प्राणी मात्र को प्रभावी तौर पर हानि पहुँचती है, जल प्रदूषण कहलाता है।

जल प्रदूषण के कारण :-

(1) मानव द्वारा जल स्रोतों निकट ही नहाना, P.T.O.

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

वाहन साफ करना, कपड़े धोना तथा पशुओं को नहलाने से जल प्रदूषित होता है।
(2) तेल वाहक जहाजों से तेल रिसने के कारण भी जल प्रदूषित होता है।
(3) जल में शैवाल, गाद आदि की मात्रा बढ़ने से भी जल प्रदूषित होता है।
(4) मानव द्वारा किये जा रहे वनों के विनाश से मृदा का कटाव हो रहा है तथा जल-प्रदूषण भी बढ़ रहा है।
(5) विभिन्न प्रकार की आपदाएँ - बाढ़, महामारी आदि, कारखानों का गंदा जल।

जल प्रदूषण से हानियाँ → प्रदूषित जल को पीने से मानव तथा पशुओं को गंभीर बीमारी हो जाती है। मनुष्यों में हैजा, निमोनिया, अतिसार, पीलिया, टाइफाइड आदि रोग फैलते हैं, तो पशुओं में आँतों के रोग हो जाते हैं।

(5) जल प्रदूषण पर रोक और संरक्षण →
(1) जल स्रोतों के निकट नहाना, कपड़े धोना और मल त्याग आदि को रोका जाए।
(2) कारखानों का प्रदूषित जल नदियों में उपचारित करके ही छोड़ा जाए।
(3) वर्षा जल का संरक्षण और पानी के अपव्यय को रोकना।

पृष्ठ के अंकों का योग

(6) उपसंहार ⇒ मनुष्य के शरीर का 70% भाग जल से बना हुआ है। पंचतत्वों में जल का महत्वपूर्ण स्थान है। जल ही हमारे जीवन का आधार है। निरंतर बढ़ते हुए जल-प्रदूषण तथा अपव्यय के कारण जल-संकट के खतरे उत्पन्न हो गए हैं। अतः आज इससे विवेकपूर्ण, संयमित एवं नियंत्रित उपयोग के द्वारा संरक्षण की आवश्यकता है।

X

BSEMP

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 20 के अंक = कुल अंक

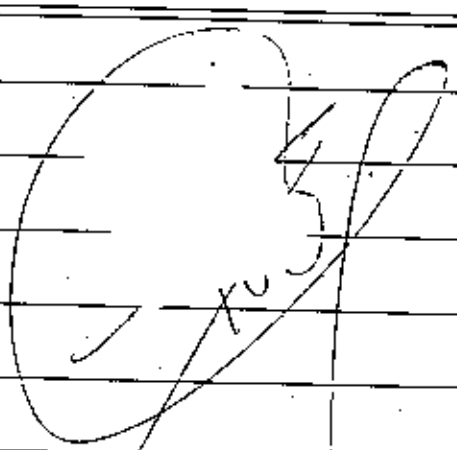

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

21

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 21 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ22 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(24) 95½ + 0 = 95½

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 24 के अंक | कुल अंक

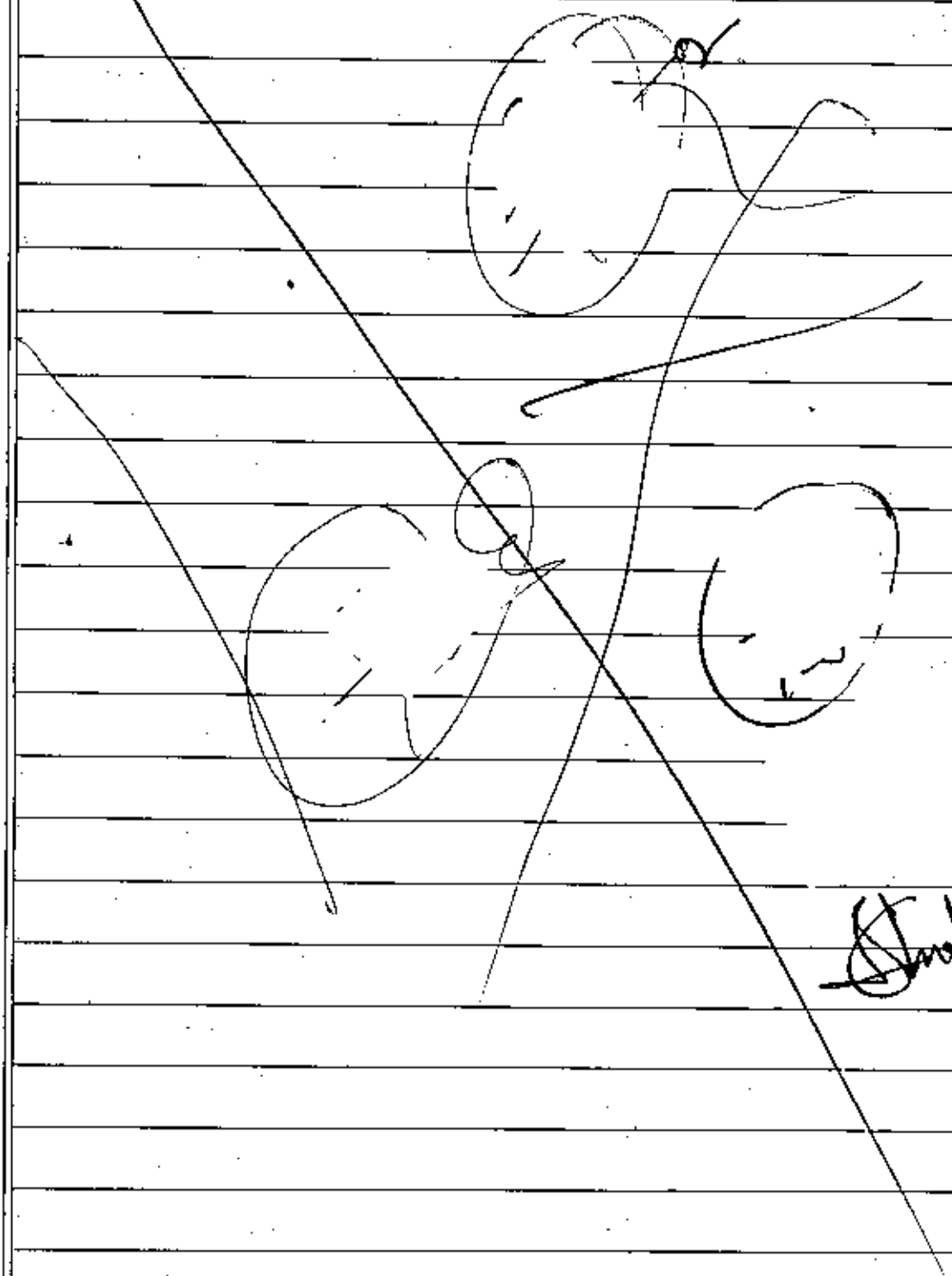

BSEMP

0

पृष्ठ के अंकों का योग